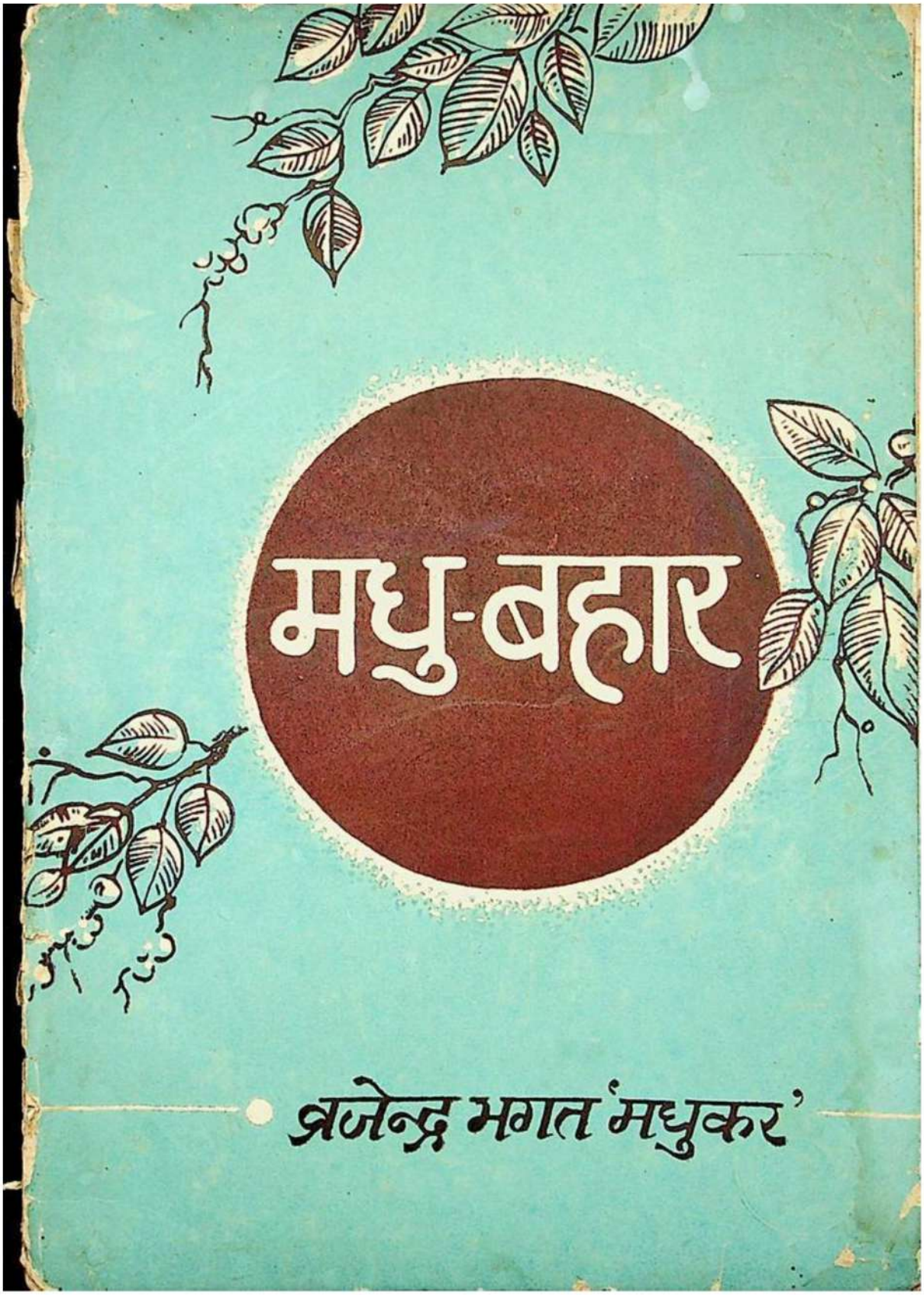
मधु-बहार
ब्रजेन्द्र भगत 'मधुकर'

लेखक परिचय

जन्म— २ सितम्बर, १९१६ ई०

शिक्षा— प्रशिक्षण महाविद्यालय, भोजपुरी, हिन्दी, फ्रेंच तथा अंग्रेजी पर पूरा अधिकार।

कार्य— शिक्षा मंत्रालय, हिन्दी अध्यापन, त्रिवेणी संस्था का आजन्म सदस्य, हिन्दी प्रचारिणी सभा के बाल्य संस्थापकों में से एक। बोवासें रोज-हिल हिन्दी परिषद् का प्रधान, नालन्दा कम्पनी का प्रधान। मॉरिशस के स्वतंत्रता संग्राम में पूरा योगदान, स्थानीय तथा भारत के प्रमुख पत्रों में गीतों, कविताओं, और लेखों का प्रकाशन। नेशनल ग्रामोफोन कंपनी, बम्बई से हिन्दी और भोजपुरी गीतों की रिकार्डिंग। मॉरिशस और भारत में कवि सम्मेलनों की अध्यक्षता। रेडियो, दूरदर्शन, शिक्षा-केन्द्रों, संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों आदि में काव्य-प्रसारण।

मधुबहार

(भोजपुरी गीत संग्रह)

लेखक

ब्रजेन्द्र भगत 'मधुकर'

http://bhojpurisahityangan.com

प्रकाशक

भोजपुरी अकादमी

पटना

लेखक
व्रजेन्द्र भगत 'मधुकर'

प्रकाशक
भोजपुरी अकादमी
पटना

© भोजपुरी अकादमी
संस्करण : पहिला (दिसम्बर १९८५)

मूल्य : पन्द्रह रुपया

मुद्रक
रामनरेश सिंह
वाल्मीकि प्रेस
पटना-४

http://bhojpurisahityangan.com

समर्पण

हिन्दी तथा भोजपुरी

के

सार्थक समर्थक पुजारियों

को

सादर सस्नेह

http://bhojpurisahityangan.com

भूमिका

मॉरिशस के साहित्यकारन में 'मधुकरजी' के यश मॉरिशस का बाहर ले फैलल बा। खड़ीबोली आ भोजपुरी के कवि का रूप में उहाँ का मशहूर बानी। भोजपुरी अकादमी का प्रति उहाँके मन में केतना मान आ प्रेम बा ई एह बात से जाहिर बा कि उहाँ का मधुबहार का प्रकाशन के अधिकार भोजपुरी अकादमी के सउँपनी। एह कविता संग्रह के प्रकाशित कर के हमरा बहुते आनंद हो रहल बा।

भारतीय मूल के लोग के लेके पहिलका जहाज १८३४ ई० में मॉरिशस (पोर्ट लूई) पहुँचल। भारत से जाएवाला लोगन में सबसे बड़ संख्या भोजपुरी बोलनिहार लोगन के रहे। ओकरे फल बा कि आज मॉरिशस में भोजपुरी बोलनिहार लोगन के संख्या मॉरिशस का आबादी के आधा से बेसी बा। इहे हाल फीजी, ट्रीनीडाड, सूरीनाम, गायना आदि देशन में भी बा। मतलब कि भोजपुरी सँचहूँ के अंतरराष्ट्रीय भाषा बा। मातृभाषा का रूप में भारत के कवनो भाषा के प्रचार विदेशन में ओतना नइखे जेतना भोजपुरी के। ई बात भोजपुरिये खातिर ना, भारतो खातिर खुशी आ गौरव के बा। एह से मधुबहार के प्रकाशन के प्रस्ताव जब हमरा सामने आइल त हमरा खुशी के ठेकाना ना रहल।

भोजपुरी अकादमी से 'मधुबहार' के प्रकाशन कई दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बा। १. भारत आ मॉरिशस के साहित्यिक-सांस्कृतिक संबंध में जे अपनापन आ प्रेम बा ऊ एह पुस्तक से आउर मजबूत होई। २. एकरा से मॉरिशस के वर्तमान जीवन आ विचारधारा के जाने के मौका मिली। ३. बारीकी से देखला पर मॉरिशस का भोजपुरी में पिछलका डेढ़ सौ बरिस में जे भाषागत परिवर्तन भईल बा, ऊ भाषावैज्ञानिक विवेचन खातिर एक रोचक विषय बा। भाषा एक भइलो पर देश आ काल का भेद से ओह में कइसे परिवर्तन हो जाला, ई देखल भाषाविज्ञान के महत्त्वपूर्ण पहलू ह। जइसे इंग्लैंड आ अमेरिका का अंगरेजी में भेद हो गइल बा उहे प्रक्रिया भारत आ मॉरिशस का भोजपुरी में भी चल रहल बा। एकर वजह ई बा कि मॉरिशस के आकार छोट आउर आबादी कम (आठ लाख) भइला से आपस के बोलचाल में एक दोसरा का भाषा से प्रभावित होखे के अवसर बहुत बा। मॉरिशस में भोजपुरी, तमिल, गुजराती, अंगरेजी, फ्रेंच, चीनी आ अफ्रीका के कई भाषा के बोलनिहार लोग बा। एही से राष्ट्रीय स्तर पर मॉरिशस में क्रेओल नाम के भाषा विकसित भइल बा जवना में कई भाषा के मेल बा।

१९७६ में द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन के अधिवेशन मॉरिशस में भइल। ओह में मॉरिशस सरकार का ओर से हमार बोलाहट रहे। ओह घरी हम पटना विश्वविद्यालय के

कुलपति रहलीं। अधिवेशन का बहाने मॉरिशस के सुन्दरता देखे के आ उहाँ बसल अपना भाई लोगन से मिले के अवसर मिलल। हम जहाँ कहीं भी गइलीं, उहाँ के भाई लोगन के प्रेम आ आत्मीयता देख के मन जुड़ा गइल। अधिवेशने में मॉरिशस के प्रधानमंत्री डा० सर शिवसागर रामगुलाम जी से हम मिले के समय चहलीं त बे कवनो तकल्लुफ के उहाँ का दोसरके दिन, नौ बजे हमरा के बोला लेलीं आ जम के पैंतालीस मिनट बात कइलीं। कवनो देश के प्रधानमंत्री के समय केतना मँहगा ह, ई जग जाहिर बा। ओह में पैंतालीस मिनट समय के कीमत कहे के जरूरत नइखे बाकिर हम जान तानी कि एतना समय हमरा भोजपुरी-भाषी भइला के आत्मीयता का कारण मिलल। ओह बातचीत में भारत आ मॉरिशस दूनू देशन के जीवन, साहित्य, संस्कृति, भाषा आदि पर विस्तार से चर्चा भइल। आज 'मधुबहार' के प्रकाशन होत खानी डा० रामगुलामजी के सौम्य मुद्रा, रसभरल बोली आ आत्मीय व्यवहार आँख का सामने नाच रहल बा, खास करके एह से कि आज से एक पखवारा पहिले उहाँ के स्वर्गवास हो गइल ह।

ई भूमिका लिखत खानी रामगुलामजी के याद में मन डूब-उतरा रहल बा।

हमरा विश्वास बा कि एक प्रवासी भोजपुरी भाई के ई रचना भोजपुरी-क्षेत्र में प्रेम आ अपनापन जगाई। मधुकरजी के 'मधुबहार' रउरा हाथ में बा। एह बहार के शोभा देखीं, आनंद लूटीं।

देवेन्द्रनाथ शर्मा
अध्यक्ष
भोजपुरी अकादमी

पटना
३१-१२-८५

http://bhojpurisahityangan.com

भारतीय आगमन की १५० वर्षगाँठ के सन्दर्भ में अमर कुली गाथा, जयहिन्दी, मधुचक्र के हिन्दी भवन "मॉरिशस" में विमोचन के शुभ अवसर पर १२ अक्टूबर, १९८४ ई० को लिया गया चित्र।

बाईं ओर से—मॉरिशस के महामहिम, महा राज्यपाल डा० शिवसागर रामगुलाम, राष्ट्रकवि व्रजेन्द्र भगत "मधुकर" और आचार्य रवीन्द्र नागर परिलक्षित हो रहे हैं।

http://bhojpurisahityangan.com

सम्मतियाँ

राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र भगत मधुकर जी की रचनाएँ अन्तर आत्मा को सहज ढंग से मुखरित करती हैं। इनकी कविताओं में सरल शब्दों द्वारा व्यापक भावनाओं के क्षितिज उद्‌घाटित करने का सफल प्रयोग अद्‌भुत ढंग से किया गया है। इनकी काव्य कला लोकरंजिनी, ओजस्विनी और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापकता की क्षमता से सार गर्भित है।

डा० मदन सिंह "मनोज"
अध्यक्ष ग्राम प्रसारण कार्यक्रम
आकाशवाणी—पटना।

मधुकर जी यथा नाम तथा गुण वाले व्यक्ति हैं, अपनी विद्या बुद्धि से सभी प्रकार के परागों से सार ग्रहण कर उसे सरल बनाकर कविता एवं गीतों के रूप में देना आपका व्यसन है। आप साहित्य साधना के जागरूक साधक हैं। आपकी कर्मठता लगन और तन्मयता प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय है।

गंगाशरण सिंह
अध्यक्ष अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संग
तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मानित
नई दिल्ली

मॉरिशस के प्रसिद्ध कवि मधुकर के जब पटना रेडियो से उनके भोजपुरी गीतन के सुर, लय अउर तान के साथ गावत सुनली त मजा आ गइल। हमर सुध बुध सभे बिसराइ गइल।

रघुवंश नारायण सिंह
सम्पादक "भोजपुरी"
आरा—बिहार।

उज्जैन की प्रतिनिधि साहित्यिक संस्था श्री हिन्दी साहित्य परिषद् में मॉरिशस के राष्ट्र कवि श्री "मधुकर" भगत ने अपनी कविताओं द्वारा जो फूलों की वर्षा की। वह सदा सर्वदा याद रहेगी।

उज्जैन के समस्त कवियों की ओर से
हरीश प्रधान
प्रधान मन्त्री
हिन्दी साहित्य परिषद्

http://bhojpurisahityangan.com

भाई मधुकर जी,

एक ही राह के हमसफर के नाते मेरी दो पंक्तियाँ स्वीकार हो—

बड़ा वह आदमी जो जिन्दगी भर काम करता है
बड़ी वह रूह जो रोये बिना तन से निकलती है

डा० रामधारी सिंह "दिनकर"
राष्ट्रकवि—पटना।

मधुकर जी,

आपके कोकिल कंठ से कुछ स्वरचित कविता पाठ सुना। आप जैसे सहृदय तथा जनकवि द्वारा भारतोत्तर देश में भारतीय भाषा एवं साहित्य का प्रचार प्रसार सराहनीय है।

लक्ष्मीकान्त मिश्र
काठमांडू, नेपाल

मधुकर जी,

व्यर्थ नहीं जाते संघर्ष, साधना, श्रम। आपने साहित्य संगीत कला के माध्यम से जो रस वर्षा की उसी को ले मॉरिशस की याद सस्नेह रखेंगे।

डा० टी० चौधरी
प्रिन्सिपल राजकीय महिला विद्यालय
उज्जैन

मधुकर जी के मुस्कुराते मुख से उनकी कविताएँ सुनकर प्रसन्नता हुई, उनकी भाषा सरल और प्रभाव पूर्ण है, तथा जीवन के कटुमधुर अनुभवों को व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है। गीतों में मधुरता के साथ साथ हृदय को स्पर्श करनेवाली अद्‌भुत शक्ति है।

डा० रामगोपाल शर्मा "दिनेश"
अध्यक्ष हिन्दी विभाग उदयपुर विश्वविद्यालय

http://bhojpurisahityaman.com

मधुकर जी आपकी राष्ट्रीय कविताओं को सुनकर मेरा हृदय आनन्द विभोर हो उठा। आप भारत-मॉरिशस दोनों के ही निष्ठावान प्रेमी और प्रतिभाशाली कवि है।

डा० वो० बी० कोल्टे
भू० कुलपति नागपुर विश्वविद्यालय

भाई मधुकर जी,

हम तोहरा से का कही :—

रोये इतिहसवा लाचार निमनके पतवा चाट गइल,
सोना के लिखलको अछरिया झिंगुरवा चाट गइल,

पाण्डेय नमंदेश्वर सहाय
[सम्पादक "अजोर" पटना

http://bhojpurisahityangan.com

आमुख

मॉरिशस हजारो मील दूरी पर हिन्द महासागर के बीच स्थित एक छोटा सा टापू है। यहाँ भारत से जो लोग आये थे वे अपने साथ हस्तलिखित ग्रथ—रामायण, महाभारत, हनुमान चालीसा, दान लीला आदि लाये थे। ये अधिकांश कैथी लिपि में लिखे गये थे।

भारत के विद्वान मानते हैं कि हिन्दी भाषा की जननी संस्कृत है, परन्तु हम उन्हीं के वंशज भोजपुरी को ही इस देश की हिन्दी की जननी मानते हैं, क्योंकि यदि भारत से मॉरिशस आये हमारे पूर्वज भोजपुरी को जीवित-जागृत नहीं रखते तो संभवतः आज यहाँ हिन्दी और हिन्दू समाज का नामोनिशान नहीं होता और हम अजायबघर में 'डो डो' पक्षी के समान दर्शकों को अपने मिटे हुए अस्तित्व के ही दर्शन कराते।

भोजपुरी गीत लिखना मैंने उस समय आरंभ किया था जब देश में मदिरा-पान विरोधी आन्दोलन चल रहा था। उस समय जनता ने प्रभावित होकर मेरी गीत-रचना का हार्दिक स्वागत किया था। उसी महत्त्वपूर्ण समय से प्रेरित होकर मेरी लेखनी भोजपुरी गीतों के क्षेत्र में केवल कागज पर ही नहीं बल्कि जन साधारण के दिल-ओ-दिमाग में भी नाचने लगी। देश की प्रताड़ित एवं दलित जनता पर पूँजीपतियों का अत्याचार बढ़ता ही जा रहा था और राजनीतिक शक्ति भी ऐसे लोगों के हाथों में थी कि कोई जनकल्याण कार्य नहीं हो पा रहा था। उस कठोर समय में मैं अपनी लेखनी और जुबान दोनों को काबू में नहीं रख सका और मेरे गीतों की धारा बहती ही चली गई।

इन कविताओं को मैंने देश की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों से गुजरते हुए तरह-तरह के विषयों पर रचा है, जैसे—राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं घरेलू विषमताओं से संबन्धित।

मुझे पूर्ण आशा है कि आज के हिन्दी-भोजपुरी के समर्थक, नवोदित साहित्यकार, गीतकार एवं गायक इन रचनाओं के सहारे हिन्दी तथा भोजपुरी को इस देश में सदा-बहार रखेंगे और इनको समृद्ध बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे।

अन्त में मैं अपने उन सहयोगियों को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इन गीतों का सम्पादन किया। अपने अन्य भूले-बिछड़े सहायक मित्रों के प्रति भी हृदय से आभारी हूँ।

कवि कुटीर
कास्काडेल
वोवासे, मॉरिशस
१-२-८५

ब्रजेन्द्र भगत 'मधुकर'

http://bhojpurisahitya.com

विषय सूची

		पृष्ठ सं०
१. घर के भेदिया	....	१
२. चाभी से खुल गइल तिजोरी	....	२
३. धूम मचल बा	....	३
४. आपन पराया	....	५
५. तब और अब	....	७
६. सहेबवा जरवेकरी	...	८
७. धरती माँगत बा बलिदान	....	९
८. अरे आजादी जगा रहल बा	....	१०
९. लाल के महिमा	....	११
१०. सोरजवा मिल के रही	....	१३
११. चाचा हो मोरे राम	....	१४
१२. आज के बिरहा	...	१५
१३. इधर उधर	....	१८
१४. काम नाहीं करबऽ त	....	२१
१५. सोना के सपना	....	२३
१६. होली आई रे	....	२४
१७. होली आवेला हर साल	....	२७
१८. दुल्हन की होली	....	२८
१९. बनाने	....	२९
२०. भला 'बनाने' कैसे होइ	....	३१
२१. हिन्दी के झंडिया	....	३३
२२. चन्दरावती	....	३५
२३. तमोलिन गौने चली	....	३६

http://bhojpurisahityangan.com

मधुबहार

(भोजपुरी गीत संग्रह)

http://bhojpurisahityangan.com

घर के भेदिया

घर में तोहर आग लगल बा
सूतल बाड़ऽ चद्दर तान,
घर के भेदिया लूट रहल बा
तोहर सारा धन खलिहान ॥
ओकरा तनिको नइखे चिन्ता
चाहे होई नित अपमान,
बहिन भाई के लज्जा इज्जत
बेचत बाटे साँझ बिहान ॥
चाँदी के कुछ टुकड़ा खातिर
बेचत बा आपन ईमान,
दुसमन ओकरा नचा रहल बा
लेवे खातिर तोहर जान ॥
ओकर बस भगवान बा पैसा
चाहे मुलुक बनी शमशान,
अइसन माहिल विद्रोही के
बिन पानी के लेलऽ प्रान ॥
अमर शहीदन पुरखन के तू
हउव बेटा बीर महान,
तन, मन, जीवन दे कुरबानी
आजादी लेला बरदान ॥

●

http://bhojpurisahityangan.com

चाभी से खुल गइल तिजोरी

केकर मुर्गा केकर छूरी ?
दुशमन के मुर्गा मित्रन के छूरी
कइसन मुर्गा कइसन छूरी ?
मुर्गा गुलामी आजादी छुरी
मातृभूमि के इज्जत खातिर मुर्गा दल पर रेतऽ छूरी ॥

कहाँ कटाई कहाँ बंटाई ?
"इलेक्शनो" में गला कटाई
कुद-उछल के भाग न पाई
कभी न फिर से बाँके पाई
विजयी दल में रोज बंटाई
स्वतन्त्रता के लाठी लेके कमर शत्रु के जनता तूरी ॥

केकर कराही कलछुल कहाँ से ?
कइसन मसाला फोरन कहाँ से ?
डबल कराही "रजाक" मियाँ के
गरम मसाला 'बिसुन' हियाँ से
मुरगा राम गुलाम पकाई साथ खियाई जीत के पूरी ॥

मुर्गी के दरबा आग लगल बा
हार के कारण हाय मचल बा
मुर्गा मुर्गी कलप रहल बा
राज बिलाइल तड़प रहल बा
ऊड़ल झंडा आसमान में चाभी से खुल गइल तिजोरी ॥

●

http://bhojpurisahityangan.com

धूम मचल बा

१

धूम मचल बा भैया धूम मचल वा
सारे मरीचिया में धूम मचल वा

२

जीत - भईल बा "त्रावाइस"[१] के
हार भईल वा "कपितालिस"[२] के
प्रजा खुशी से बड़ा झूम रहल वा ॥ धूम मचल वा ॥

३

पावल टटके करनी - फलवा
गलल नाहिं ओकर दलवा
छटपटा के धूर-धकर चूम रहल बा ॥ धूम मचल वा ॥

४

होनिहारी बतिया रह गइल हो के
हारल गोरवा रह गइल रो के
रह रह के नाक आपन धूनि रहल बा ॥ धूम मचल वा ॥

५

कभी न जाला हाय गरीव के
मेट न जाला लेख नसीब के
गली गली टूअर नियर घूम रहल वा ॥ धूम मचल बा ॥

६

गरीव जनता उदार दिल के
काम करी सब साथ मिल के
चाहे माई भाई के भी खून बहल बा ॥ धूम मचल बा ॥

---

१. मजदूर दल ।
२. पूंजी पतिदल ।

http://bhojpurisahityangan.com

७

चान सूरज जैसे गगन के
हार - जीत बा संगी जनम के
दुनो दिवस रात नियर घूम रहल बा ।। धूम मचल बा ।।

८

चिन्ता छोड़ा हारल दाव के
चोर के सौ दिन एक दिन साव के
झंडा गगन मगन झूम रहल बा ।। धूम मचल बा ।।

●

http://bhojpurisahityangan.com

आपन पराया
(बिरहा)

आपन अदमिया के गारी भर पेटवा हो
गोरवा के तेलवा लगाय,
नीक लागे गोरवा के लात, बात, जुतवा हो
आपन के बोलि न सहाय,
आपन अदमिया के फोरे दूनो अँखिया हो
गोरवा के चश्मा लगाय,
आज पूँजीपतियन के नीच जाति बेचवा हो
पाप के पईसवा पचाय ॥
अइसन अदमिया के सोच न फिकिर बा हो
चाहे लाज रहे या बिकाय,
ओकरा पियार बाटे पाप के पइसवा हो
चाहे जाति रहे या बिलाय,
आपन ही घरवा में पलेले कुचड़वा हो
जैसे पले गाय में कसाई,
आपन ही जतिया के मारेले कटरवा हो
गोरवा के फुलवा चढ़ाय ॥
गोरवा के हथवा मे चाँदी के चबुकवा हो
आपन अदमिया गरीब,
मिलवा, मोटरवा, महलिया, खजनवा हो
आपन बा झोपड़ी नसीब,
गोरवा के नित मिले दूध भात, गोसवा हो
आपन बंधल बाटे जीभ,
गोरवा त पहिरे रेशमवा के लुगवा हो
आपन त चीथड़ा नसीब ॥

http://bhojpurisahityangan.com

लटका

माहिल - शकुनिया से बचिहे रे भैया।
लालची घूरतवा से बचिहे रे भैया।
नीच जाति बेचवा से बचिहे रे भैया।
स्वार्थी मलेछवा से बचिहे रे भैया।
चोर बेइमनवा से बचिहे रे भैया।
एही लोगन तोहरा फंसाय॥

दुशमन के एको नाहि वोट दीहे भैया।
चाहे तोहर बाप होखे, चाहे तोहर मैया।
बेहाया के जाल से बचिहे मोर भैया।
गोरवा सवारी देइ चढ़ लिहे भैया।
मजुरा के "पार्टी" में "वोट" दिहे भैया।
एही लोगन रजवा चलाय॥

http://bhojpurisahityangan.com

तब और अब

(ये बिरहे सन् १९४८ के चुनाव से संबन्धित हैं)

जब से सन्सदवा में "बावाइस"[1] अइले हो घट गइले दुखवा हमार।
नया नया भवना बिसाल बनवले हो जहाँ पढ़े लरिकपन हमार॥

आगे के संसदवा में पूँजिपति गोरवा हो चूसले बा खुनवा हमार।
कूटले बा, लूटले बा रातदिन पुरखन के आवरू-इजतवा हमार॥

गोरवन न कर सकल संकड़ों बरिसवा में पाँच में कइले रामगुलाम।
सब बूढ़ बूढ़ियन के पेन्शन दियवले हो कइले बड़ा ही शुभ काम॥

गोरवा त देत रहे दस आना एकदिन पशु नीयर लेवे नित काम।
मजुरा के भर पेट भोजन मिलत बाटे चीनी के मिलत बाटे दाम॥

चुहवा कूदत बाटे गोरवा के पेटवा में निंदिया भइल बा हराम।
करनी के फलवा से काँपेला करेजवा हो, जीयल भइल बा हराम॥

पहिले पइसवा से मजुरा बिकात रहे बरधा-बकरिया के दाम।
अब त गुजर गइले दुखवा के दिनवा हो सुखवा के उगल बा घाम॥

तब अउर अब में फरक बाटे भइया हो संभर के दीह मतदान।
नोच अर कठियन से बार-बार बचिह तूं नाहिं त संकट फंसी प्रान॥

जतिया के जीतवा में मजूरन के जोतबाटे, हार बाटे गोरवा के चाल।
अपन ही 'पार्टी' में सोच सोच 'बोट' दिह होइ जइहें पुरखा निहाल॥

---

१. मजदूर दल।

●

सहेबवा जरबे करी

अब भइले 'आवाईस'[1] के राज, सहेबवा जरबे करी,
जहाँ हारल बा ओकर समाज करेजवा फटबे करी,
ओकर खाना भइल बा खराब जरंतवा जरबे करी ॥

पहिले के राज पाट हाथ से निकल गइल,
राजा के ठाट बाट माटी में मिल गइल,
मिल गइले 'आवाईस' के राज सहेबवा जरबे करी ॥

लाखों रुपइया हाथ से निकल गइल,
जीते में ओकर बाजा भी बज गइल,
सज गइले 'आवाईस' के साज सहेबवा जरबे करी ॥

आपन गहिरवा में अपने ही गिर गइल,
करनी के फलवा टटके ही मिल गइल,
मिल गइले 'आवाईस' के ताज करेजवा फटबे करी ॥

तवा के रोटिया तवे पर जर गइल,
मनवा के बतिया मनवे में रह गइल,
रह गइले 'आवाईस' के लाज, सहबेवा जरबे करी ॥

भूल से भैया कतने भरम गइल,
कतने के थाती, लाज सरम गईल,
सरमइले सहेवबा के जात, करेजवा फटबे करी ॥

गोरवा के हेंकड़ी धरती में धंस गइल,
जय जय 'आवाईस' मरिच में मच गइल,
मच गइले विजय के धमार, सहेबवा जरबे करी ॥
करेजवा फटबे करी, जरंतवा जरबे करी ॥

---

१. मजदूर दल ।

●

http://bhojpurisahityangan.com

धरती माँगत बा बलिदान

धरती माँगत बा बलिदान

स्वतंत्रता के झंडी लेके माँगत बाटे जीवन दान।
माँ के दूध लजइह नाहीं, मातृभूमि के वीर जवान॥
धरती माँगत बा बलिदान॥

आज गुलामी नाच रहल बा, जहर पिया के मुआ रहल बा,
तोहर बल पर कूद रहल बा, हाड़-मास सब चूस रहल बा,
इज्जत-पानी लूट रहल बा, भेड़ा जइसन कीन रहल बा,
चाँदी चाबुक चला रहल बा, नीमक घाव पर छिटक रहल बा,
रक्षक बनके भक्षक दुशमन राह चलत बा छाती तान,
धरती माँगत बा बलिदान॥

बहिन के लज्जा लूट रहल बा, सेनुर माँग के मिटा रहल बा,
छुरी गला पर रेत रहल बा, गारी फजिहत करा रहल बा,
माहिल कुचड़ा फँसा रहल बा, आपन लकड़ी लगा रहल बा,
गला साँच के दबा रहल बा, महल रेत में बना रहल बा,
मुह में राम, बगल में छुरी लेके माँगत बा मतदान,
धरती माँगत बा बलिदान॥

"बेल्वी आरेल"[1] बोल रहल बा, सती साधवी बोल रहल बा,
सुरत कब्र से बोल रहल बा, रिपु के भंडा फोड़ रहल बा,
गाड़ल मुर्दा बोल रहल बा, पूर्वज प्राणी बोल रहल बा,
अमर शहीद गुहार रहल बा, तोहरा के उभार रहल बा,
दुश्मन दल के चिता सजा के लेलऽ आजादी वरदान,
धरती माँगत बा बलिदान॥

---

१. दुर्घटना स्थल जहाँ पर निहत्थों पर गोलियाँ चलाई गई थीं,

अरे अजादी जगा रहल बा

अरे ! अजादी जगा रहल बा ।
"मॉरीशस" के गंगबांमन में विजय पताका उड़ा रहल बा ।
अरे ! अजादी जगा रहल बा ।

पुरुब दिशा में सूरज जागल, रात गुलामी के अब भागल
सभी जनावर पंछी जागल, जगल चन्द्रमा, तारा जागल
भइल सबेरा, आलस छोड़ऽ, स्वतत्रता अब जगा रहल बा ।

धरती अरू आकास भी जागल, जनता के विश्वास भी जागल
शिव शंकर कैलास से जागल, पुरखन के इतिहास भी जागल
कुंभ करन निंदिया से जागऽ किसमत तोहरा जगा रहल बा ।

स्वर्गलोक से "रोज्मों" जागल, सिनिवासन, मणिलाल भी जागल
गांधी-सत्य अहिन्सा जागल, वीर जवाहर लाल भी जागल
जगल भवानी, चंडी जागल, काली भैरव जगा रहल बा ।

शकुनि, माहिल, जयचन्द जागल, जाहिल दुश्मन कुचड़ा जागल
जूता चटवा कायर जागल, जातपाँत के पचड़ा जागल
घर के भेदिया देश जाति के इज्जत माटी मिला रहल बा ।

अर्जुन के अभिमान भी जागल रामचन्द्र के बाण भी जागल
शिव प्रताप के शान भी जागल, पुरखन के बलिदान भी जागल
युग युग से सूतल समाज के चक्र सुदर्शन जगा रहल बा ।

किरिया तोहर नव जवान सब ! मातृ भूमि के इज्जत-लाज
किरिया तोहर पूर्वज के सब जे नहिं लेलऽ, बदला आज
जुग जुग नरक के ज्वाला जरवऽ, "मधुकर" नारा लगा रहल बा ।
अरे ! अजादी जगा रहल बा ।

●

लाल के महिमा

("स्वतत्रता संग्राम के अवसर पर रचित")

लाल रे गगन भइल, बदरी भइल लाल
किरिन सुरुजवा के लाल।

लाल रे तरैया भइल बिजुरी भइल लाल
धरती के छतिया भी लाल॥

समुन्दर लाल भइल, नदिया भइल लाल
झंडिया मरीचिया के लाल।

गछिया, पहाड़ लाल, फूल, फल सब लाल
दुनिया भइल बा हो लाल॥

राम के तिलक लाल सीता के सेनुर लाल
लाल लछुमन के दुसाल।

राम के गुलाम के हो, पगिया लंगोट लाल
लाल ओठ लाल लाल गाल॥

माइ के सपूतवा के गोटिया भइल लाल
घर घर उड़ेला गुलाल॥

विजय के संख बाजे, बाजेला मृदंग झाल
जनता भइल हो निहाल॥

●

http://bhojpurisahityangan.com

लटका

लाल आज गाँव भइल डगर-नगरिया।
हिन्दुअन के लाल सब कमाल कइले भैया।
गोरवा भी लाल भइल लाल भइल गोरिया।
लाल के विजय सुन गाल भइल करिया।
लाल लाल अँखिया से लाल गिरे भइया।
लाल के महिमा गाइ कहाँ ले "भगत" लाल,
लाल वीर जाति के निशान॥

http://bhojpurisahityangan.com

स्वरजवा मिल के रही

(स्वतंत्रता संग्राम से संबन्धित यह गीत है)

मॉरिशसवा में जल्दी रे भाई—स्वरजवा मिलके रही।
लाख दुश्मन करे चतुराई—स्वरजवा मिलके रही॥

देश के घातक नाक धुनत वा,
स्वार्थ के आगे कुछ ना सुनत वा,
"मुलवन"[1] के मलिकवा लजाय—स्वरजवा मिलके रही॥

'लेवर' दल बल आगे बढ़त वा,
कसके कमर मुट्ठई से लड़त वा,
मचल बाटे भयंकर लड़ाइ—स्वरजवा मिलके रही॥

रामगुलाम बा हमनी के नेता,
प्राइम मिनिस्टर कुली के बेटा,
कहत बाटे ढोलकवा बजाय—स्वरजवा मिलके रही॥

घरवा के भेदिया, आग लगावन,
जाति के बेचवा गाल बजावन,
चाहे गोरवा के हाथ बिकाय—स्वरजवा मिलके रही॥

चाहे विरोधी टाँग अड़ावे,
चाहे मदीरा मुर्गा चढ़ावे,
चाहे रुपिया करोड़ो बहाय—स्वरजवा मिलके रही॥

---

१. मुलवन—कारखाना।

http://bhojpurisahityangan.com

चचा हो मोरे राम

चचा हो मोरे राम घर लवले स्वरजवा।
वनल सब काम सरमइले सहेववा॥

घरे घरे उड़े लागल लाल लाल झंडिया,
रामू सेना पति बलि बजरंगिया,
लाल लंगोटिया लाल सिर पगिया,
सजल बरियात लाल ऊड़न खटोलवा,
चलल ससुरार बनठन के दुलहवा॥

मिलल अजदिया सुधर दुल्हनियाँ,
पाँव में शोभे घुंघरु पैजनियाँ,
रेशमी ओढ़निया, हार गिरनियाँ,
बिजुरि नीयर आज चमकेला लिलरवा,
बजावे संग साथ शहनाई सजनवा॥

अइसन शादी भइले मरिचिया,
खुसिया मनावे शिव के संघतिया,
कूदन लागे गोरवा फिरंगिया,
दहेज मिलल आज, सकल पूंजी खजनवा,
धुमिल भइले आज पूंजी पतियन के मनवा॥

भर क्षुधा मिली सबके रसोइया,
काम बराबर लुग्गा रुपइया,
लागी किनारे जीवन के नइया,
करी हो अब राज मिहनत पर मजुरवा,
बरसावे आशीर्वाद सुरलोक से सुरेशवा॥

●

आज के बिरहा

आज रे मरीचिया में सगरे लगल आग
भइल मजूर बदनाम।
गरिबन के माथ पर लागल कलंक दाग
बड़ा ही दुखि वा रामगुलाम।
दुशमन देख देख फुलल गरब आज
बनल कुटिलवा के काम।
हिन्दु जाति लात, बात, सगरे से खात बाटे
जोखिम पड़ल बाटे जान।
नगर नगरिया में जहाँ देख उहाँ उहाँ
लूटल ओकर ही दुकान।
गोरवा के महल मोटर नाहि एकहु हो
जरल न खेत खलिहान।
अँटवा के संग संग जँतवा पिसाइ गइल
घुन नीयर प्रजा महान।
साधु भी पिटाइ गइल, गाइ सभ बंधाइ गइल
भईल अति ही अपमान।
गुंडवन के असलि लिडरवा निकल गइल
चोरवा क मुह भइल चान।
"कॉकटेल मोलो टोव" नाहि हो कटार छरी
नाहि बम, गैस हथियार।
मुखवा के अगिया बुझाइ नाहि लाल परी
करिले विचार मोर यार।
मार काट, तोड़-फाड़ नाहि दुख दूर करी
मिट जाइ सब अधिकार।

http://bhojpurisahityangan.com

फिर से गुलाम नाहिं बने के विचार कर
अँखिया से पटिया उतार।

मन के मइलवा क धोइ डार फेंक डार
तजि डार कुटिल विचार।

गरब-गुमनवा के मुड़िया मरोड़ डार
कर आपन अपने उधार।

बिन तलवार के हो बिन ही बन्दुकवा के
बिन ही करले तकरार।

सेना बिन, युद्ध बिन, भारत मुलुकवा के
कइलन पल में अजाद।

गंधिया के पथ पर चलले में जीत बाटे
"मधुकर" करता गुहार।

http://bhojpurisahityangan.com

लटका

जहाँ तोहर हक वाटे लेलिह भैया।
काम हो पियार वाटे चाम नाहिं भैया।
बिन काम दुख वाटे सुख नाहिं भैया।
काम में धरल वाटे आवरु रुपैया॥

काम में धरम वा सरम नाहिं भैया।
काम में स्वरग वा नरक नाहिं भैया।
काम में जीवन वा मरन नाहिं भैया।
काम में अनन्द भगवान रमें भैया।
बिन काम तोहरा के वाप, माई नाहिं पूछि
पुतवा फिराइ आपन आँख॥

http://bhojpurisahityangan.com

इधर-उधर

इधर बा सचाई, उधर झूठ भाई
इधर मौन गाई, उधर बा कसाई
इधर मित्रताई, उधर दुश्मनाई
इधर सुख भलाई, उधर दुख बुराई ।।

इधर धर्मधारी, उधर बा विधर्मी
इधर कर्म योगी, उधर बा कुकर्मी
इधर शर्म हाया, उधर बा वेशर्मी
उधर मुहफट बा, इधर सत्य कर्मी ।।

इधर राम लक्ष्मण, उधर बा दशानन
इधर कृष्ण अर्जुन, उधर बा दुःशासन
इधर प्राण दाता, उधर खून पीवन
इधर साथ सुर्जन, उधर संग दुर्जन ।।

इधर एकता बा, उधर फूट ज्वाला
इधर मधुर बोली, उधर मुहमें ताला
इधर जीवनामृत, उधर जहर हाला
इधर स्वर्ग सुन्दर, उधर नरक नाला ।।

इधर मुक्ति दाता, उधर बा गुलामी
इधर देश रक्षक, उधर बा हरामी
इधर देश गौरव, उधर क्रूर स्वामी
इधर मान इज्जत, उधर बेइमानी ।।

इधर शांति "जस्टिस" उधर बा 'करप्शन'
इधर एकता बा, उधर बा' डिवीजन'
इधर बा 'डिवोशन' उधर "प्रोवोकेशन"
इधर सभ्य "नेशन" उधर "एजिटेशन" ।।

http://bhojpurisahityangan.com

इधर कर्म योगी, उधर भोगी नेता
इधर वा अजादी, उधर कैद बेटा
इधर जिन्दगी वा, उधर मौत बेटा
उधर हार निश्चय, इधर सब विजेता ॥

इधर "वोट" दीहा, उधर "नोट" लीहा
कुटिल जाति घातक, के माटि मिलइहा
उधर मुंह काला, विरोधी के करिहा
इधर पूरवज के, तू लज्जा वचइहा ॥

●

http://bhojpurisahityangan.com

'तुक्तक'

नहीं भुलाइब गोली काण्ड,
उजड़ल खेती अगनी काण्ड,
प्रजा के भारी अपमान,
गोरन के "मिलियन" में दान ॥

× × ×

आज विरोधी काँप रहल बा,
पूंजीवाद के हाथ बिकल बा,
"चीजिमुन"[१] के फाँस रहल बा,
निश्चय ओकर नाश रखल बा ॥

---

१. दरिद्रनारायण ।

http://bhojpurisahityangan.com

काम नहीं करबऽत.....?

काम नहीं करबा त खइबा कहाँ से।
मस्ती में जीवन बितइबा कहाँ से?
बोला ए मिन्तर, तू बोला महासे।
काम नहीं करबा त खइबा कहाँ से?

मिहनत के रोटी कमाला रे भइया
मिहनत पसीना से छाना रुपइया
मिहनत से मिली दुधारी दुइ गइया
बाजी निरन्तर नगर में बंघैया
खुसी से गाइ बहिन बाप मइया
नाची बहुरिया, मेहरिया अंगनइया
घुँघरू भी बाजी झनक झनकइया
मिहनत बिना धन कमइबा कहाँ से?
बंसी चइन के बजइबा कहाँ से? काम.....

बंगला महलिया बनइबा कहाँ से!
मोटर "तबिस्मा"[1] चलइबा कहाँ से?
सोरह सिंगार सजइबा कहाँ से?
टी० वी०, विडियो लगइबा कहाँ से?
होटल में बोतल चढ़इबा कहाँ से?
मुर्गा मुसल्लम जमइबा कहाँ से?
तीरथ जात्रा में जइबा कहाँ से?
होली दिवाली मनइबा कहाँ से?
लरिकन पढ़इबा गुनइबा कहाँ से? काम.....

सोना सन देहिया के माटी मिलइबा
खाली लफ्फाफी में जिनगी बितइबा
व्यर्थ में सुन्दर जवानी गंवइबा

---

१. कारखाना।

दादा के पैसा गमत में गंवइवा
हिन्दी के अंचरा में कचरा लगइवा
बोली क्रियोली के माथे बिठइवा
आपन अदिमिया के माहुर पियइवा
जाति धरमवा बचइवा कहाँ से ? काम.....

आँधी जमाई त हड़ताल करवा
सूखा सताई त हड़ताल करवा
स्वारथ के छाया में हड़ताल करवा
धुर्तन के खातिर तू हड़ताल करवा
और जब

हड़ताल करिहन जा मिलकर के भाई
तोहरा से माँ, बाप, सुता-सुत-लुगाई
मची हर घड़ी घर भयंकर लड़ाई
गल्ला के रस्सी छड़इवा कहाँ से
मारी मुदइया मिट जइवा महासे। काम.....

मिहनत मजूरी में कइसन सरम हो,
चोरी चमारी में भारी सरम हो।

बैठल निकम्मा में भारी सरम हो,
मिन्तर के निन्दा में भारी सरम हो।

मिहनत से करला सुनर शुभ करम हो,
मिहनत ही मानव के असली धरम हो।

मिहनत ही मुक्ति के पावन मरम हो,
मिहनत बिना नींद आई कहां से।

देसवा के इज्जत बचइबा कहाँ से ?

●

http://bhojpurisahityangan.com

सोना के सपना

(आप्रवासी गिरमिटिया के सपना)

(बिरहा)

सोनवा के लोभवा में देसवा बिसरिले हो
सोना सुन मरीचिया के नाम,
सुन के कि पग पग सोना सवा सेर मिली
करे के न परी कवनो काम,
खाय के मुफत मिली माखन, मिठाइ मेवा
पिये खातिर दुधवा बदाम,
नरम नरम मिली सुते के गलइचा हो
परी करी चाकरी सलाम।
अइते मरीचिया में सोनवा सुदेहिया से
बँधल गुलमिया जंजीर,
खाइ के त रात दिन लौर गारी, लात मिले
पीये के नयनवा के नीर,
माहुर माहुर भरल गोरवा के बतिया हो
बिंधले करेजावा में तीर,
ऊखवा के खेतवा में गल गइले सोनवा के
सोनवा समनवा सरीर।
परती जमीनिया में ऊखवा उगाइके हो
सोनवा भरले खलिहान।
लहुआ के बुंदवा से सिचले मरीचिया हो
सोना नीयर कतने जवान।
बीर नीयर काम कइले कुलियन के बाँके लाल
भारत के गरब गुमान।
जेकरा कारन आज देसवा अजाद भइले
चौरंगिया उड़े आसमान।

●

होली आई रे

होली के दिन होली आई रे ओढ़े लाल चुनरिया।
रंग भरी चोली लाई रे लाल रस के गगरिया॥

लाल दीवाकर लाई चन्दरमा
लाल समुन्दर लाल गगनवा
लाल घटा घिर आई रे भई लाल धरतिया॥ होली के दिन

सेस महेस, गनेस भी नाचे
सन्त समाज सुरेस भी नाचे
सरस सुधा सरसाई रे गिरि-पर्वत कैलसिया॥ होली के दिन

दुर्गा दिनेसर, विसेसर भी गावे
डमरू डमाडम नगेसर बजावे
सुनर साज सजाई रे बहुरंगी प्रकृतिया॥ होली के दिन

लेकर के राम कनक पिचकारी
पहु.चे जनकपुर सिया के दुआरी
जनक सुता सरमाई रे झुकी तिरछी नजरिया॥ होली के दिन

जमुना किनारे रास रचावे
राधा के दिल के दरदवा मिटावे
मोहन कुंवर कन्हाई रे मारे तान मुरलिया॥ होली के दिन

देस "मारीशस" के पावन चरण में
भारत माँ के मानस भवन में
जनता धूम मचाई रे बाँध पाँव पायलिया॥ होली के दिन

फागुन में जेठ जेठानी न कोई
कोई न ऊंचा न नीचा ही कोई
घर घर भाँग छनाई रे झुमे माई मेहरिया॥ होली के दिन

सर सिव सागर राज चलावे
परजा के संगे ठिठोली मनावे
आनन बीन बजाई रे अस्सी पाँच के रसिया॥ होली के दिन

http://bhojpurisahityangan.com

आज अरुनवा होली मनावे
हरगू के गाल गुलाल लगावे
ठंढइ छक के छनाई रे भूल गाँधी के बतिया ।। होली के दिन
होली मनावे बबुआ बखोरी
लेकर के साथे कविता किसोरी
"भगत" जगत भरमाई रे ओढ लाल चदरिया ।। होली के दिन
उत्तम सुरेन्दर होली मनावे
आपन पिता के करेजा जुड़ावे
विद्या के मान बढ़ाई रे रामदीयला के नतिया ।। होली के दिन
नागर जी गागर में सागर भरावे
धर्म करमवा मरमवा सिखावे
हरषि आग लगाई रे होलिका के चुनरिया ।। होली के दिन
आज पुनम के रात सुहानी
फाग मनावे रघुबर के रानी
रस के कलस छलकाई रे मोहे ताके कनखिया ।। होली के दिन
फाग मनावे धरमवीर घूरा
खाखा के चूरा डकारे धतूरा
होली हुरदंग मचाई रे बाँध पाँव पटलिया ।। होली के दिन
राय दयानन वसन्त मनावे
गीता रामायन के गीत सुनावे
भाभी मगन मुस्काई रे करे नैना कजरिया ।। होली के दिन
लाल मुनेसर झाल बजावे
मुनेसरी संग ताल मिलावे
चिन्ता के दूर भगाई रे सोच रतिया के बतिया ।। होली के दिन
प्राइम मिनिष्टर होली मनावे
अरिया सनातन घर थरिया बजावे
फुले प्रजा न समाई रे हरखाए विदेसिया ।। होली के दिन
होली मनावे राम लला हो
दिन में दिखावे चौंसठ कला हो
साली के मुहवा लगाई रे मन मारे मेहरिया ।। होली के दिन
आज मचल बा T. V. पर होली
रंग के गठरी कवियों ने खोली
घर घर बजेला बधाई रे नाचे सारी मिरचिया ।। होली के दिन

मजुरा किसानन के हाल बेहाल बा
ना घर में चावल न आटा न दाल बा
होली कहाँ से मनाई रे नाचे हाँडी में चुहिया ।। होली के दिन

तंगी भी नाचे फकीरी भी नाचे
चांदी के चाबुक अमीरी भी नाचे
नाच रही महंगाई रे जे में नाचे पतुरिया ।। होली के दिन

बालक युवा वृधा नरनारी
नाचे छमक छम देदे के तारी
पिचकारी रंग चलाई रे झुमें गाँव नगरिया ।। होली के दिन

राजीव गाँधी के राज मिलल बा
भारत के जनता के ताज मिललबा
लज्जा सभी के बचाई रे इन्दिरा के सपुतबा ।। होली के दिन

आज स्वराज के श्रोत भइल बा
रात गुलामी के बीत गइल बा
कइसे संघतिया भुलाई रे पुरखन के तपसिया ।। होली के दिन

"मधुकर भगत" के लाल सरिरवा
छुटल सजन जन के बाँटे अविरवा
मुक्ति के तान सुनाई रे सरे आम बजरिया ।। होली के दिन

धार सुधारस धरती बहाई
जीत पताका गगन लहराई
दुनिया सकल हरषाई रे रंगे सब के सुरतिया ।। होली के दिन

अवध बिहारी गोवरधन धारी
मंगल कारी मनुज अवतारी
"मधुकर" शरन हरि आई रे करे संझा अरतिया ।।

होली के दिन होली आई रे
ओढ़े लाल चुनरिया ।
रंग भरी चोली लाई रे
लाई रस के गगरिया ।।

नोट : लेखक की प्रधानता में दूरदर्शन "मॉरिशस" से राष्ट्रीय वृहद कवि सम्मेलन के अवसर पर यह गीत प्रदर्शित किया गया ।

●

होली आवेला हरसाल

होली मनावे हर साल गोरी के लाल
धूम मचावे वृध बाल ॥
कोई सवेरे जाला मंदिरवा
कोई लगावे लाल अबिरवा
कोई चढावे भांग घतुरवा
चनन, चुनरिया, गुलाल, गोरी के लाल ॥
कोई लगावे लाल लिलरवा
कोई सुनावे झूमि झुमरवा
कोई बजावे झाल मंजिरवा
दे दे तिनाधिन ताल, गोरी के लाल ॥
सासु पकावे पुवा जे पुरिया
नान खताई, खीर बहुरिया
गुलाब, जामुन माइ मेहरिया
मगन मन भर थाल, गोरी के लाल ॥
बड़ा सुहावन मास फगुनवा
बड़ा लुभावन मुक्ति सुदिनवा
सुराज झंडिया उड़े गगनवा
भईल "भगत" निहाल, गोरी के लाल
होली आवेला हर साल, गोरी के लाल ॥

(**और एक साल बाद**)

बड़ा कठिनवा आज के दिनवा
पूंजीपती के चानी करनवा
रोवे मजुरवा, रोवे किसनवा
सारा मरिचिया बेहाल, गोरी के लाल ॥
प्रभु बचावे तत्काल
गोरी के लाल !
होली आवेला हर साल ॥

●

http://bhojpurisahityangan.com

दुल्हन के होली

होली में दुल्हनिया झूमेला
झूम झूम के दुल्हा चूमेला
अंगिया से अमृत चूवेला
रस रंग समुन्दर डूबेला ॥

सोभे दुल्हनिया माथे टिकुलिया
चमके चमाचम जैसे बिजुलिया
सुन्दर उगरिया, सुन्दर मुनरिया
माँग में सोभे कुमकुम सिनुरिया
नैना हो नैना·····।
नैना से मदिरा ढरकेला, झुमका कानन झमकेला ॥

देव के कन्या लागे दुल्हनिया
बड़िये छुलाछन मूरत मोहिनिया
कंठ में सोभे हार गिरनिया
रेसम के ओढ़ लाल ओढ़निया
हथवा हो हथवा·····
हथवा में कंगना सोभेला अंग अंग से अंगना उमगेला ॥

नवा दुल्हनिया गइले गवनवा
गोदी में लावे लाल पहुनवा
दादी झुलावे रूपा पलनवा
नाचे तिनाकधिन माई अगंनवा
दादा हो दादा·····
दादा के मनवा डोलेला लरिका जब हंसके बोलेला ॥

झूमर सोहर गावे पंवरिया
नानी बजावे सोवरन थरिया
नाना लुटावे माल मोटरिया
घूम मचावे गाँव नगरिया
हरखे हो हरखे·····
सज्जन, सुरजन सब हरखेला, घरवा में बधइया बाजेला ॥

●

http://bhojpurisahityangan.com

"बनाने"

आज बनाने[1] आइल बा
सन्देश सुहाना लाइल बा ।।

ओढ़ चुनरिया आजादी के मन ही मन मुस्काइल बा ।।
कहीं पटाखा बाज रहल बा, झाल, मंजिरा ढोल हो
नीच गुलामी नाच रहल बा मन के परदा खोल हो
तन में आपन आज लगाके फूट के करिखा झोल हो
स्वतंत्रता पर बलि जा प्राणी ई काया अनमोल हो ।।
केहू खिलौना लरिकन खातिर कीनत सजल दूकान हो
केहू माँ बहिनी के खातिर कीनत बा सामान हो
आज खुशी से नाच रहल बा बूढ़ा बाल, जवान हो
मेहरी होठवा लाली डाले मुंह में कचरे पान हो ।।
केहू गर्व गुमान भरल बा रुपया के भरमार हो
केहू के घर हाय मचल बा होवत नर संहार हो
चीनी के अब दाम गिरल बा मजुरा बा बेकार हो
टूटल कमर किसानन के अब आग लगल संसार हो ।।
कहीं दूध के नदी बहत बा कहीं आँख में लोर हो
कहीं गरीबी नाक धुनत बा रोज मचावे सोर हो
माँस कहीं पर कुत्ता सूंघे 'कहीं' भूख बड़ि जोर हो
कहीं सबेरा होवे जल्दी कहीं दूर बा भोर हो ।।
केहू के घरवा रास रचत बा दुख में मरे पड़ोस हो
केहू गुल गुल गादी बैठे केहू मरे बेहोश हो
केहू केवल भासन झारे करे न करनी ठोस हो
ऐसा ही लोगन पर "मधुकर" करे नित्य अफसोस हो ।।
बूढ़ा लोगन बोल रहल बा बचपन फिर कब आई हो
गोदी में माँ के चढ़तीं हम खइतीं मखन मलाई हो

---

१. नूतन वर्ष ।

राजा बेटा बापू बोलत भौजी कुंवर कन्हाई हो
फिर से आइत हंसत जवानी बाजत फिर शहनाई हो ॥

"बोनाने" बा धनियन खातिर भइया मोर विचार हो
करजा काढ़ बनाने करिबा हो जइबा लाचार हो
नया साल में सोच समझ के धरिहा पाँव संभार हो
जतना चद्दर होई उतना पंया लिहा पसार हो ॥

हमरा से तू लेला भैया आजादी उपहार हो
अपन धरम करम के नैया करिहा हंस हंस पार हो
एही आसिरवाद हमर बा जीया साल हजार हो
कहीं भी रहिहा सुख से रहिहा करिह देस उद्धार हो ॥

फिर से और बनाने आई सुमवा के घर धूम मचाई
हरदम जीवन ज्योत जलाई सत्य, अहिन्सा प्रेम बढ़ाई
न्याय, दया के बीन बजाई भइचारे के पाठ पढ़ाई
दुख संकट के दूर भगा के "मॉरीशस" के स्वर्ग बनाई ॥

आज बनाने आइल बा

●

http://bhojpurisahitya.com

भला 'बनाने' कइसे होई ?[1]

भला 'बनाने' ! मोरे मिन्तर ! आज बनाने कइसे होई ?
बरखा पानी बरसत नइखें, रोवत बाटे सब ही कोई
भला बनाने कइसे होई ?

घनकत बा धरती के छाती, चौपट हो गइल सारी खेती
जेब में कौड़ी एको नइखे आदर मान कहाँ से होई ?
आज बनाने कइसे होई ?

'कान'[2] में कमती हो गइल चीनी, ससुरा 'कादो'[3] कइसे कीनी ।
पिलही सबके चटकल बाटे, आज गुजारा कइसे होई ।
भला बनाने कइसे होई ?

मुर्गा कइसे काटल जाई, नइहर बेटी कइसे आई ?
मुह लटका के हमहू जाई, नाक पकड़ के साली रोई ?
भला बनाने कइसे होई ?

नाच सिनेमा जइबा कइसे ? मौज उडइबऽ घर में कइसे ?
"हाँडी" में चूहा कूदत बा, पेट कहाँ से भरती होई ?
भला बनाने कइसे होई ?

तंगी सब के काट रहल बा जन मन हाहाकार मचल बा
रोवन पीटन लागल बाटे हाहा होही कइसे होई ?
आज बनाने कइसे होई ?

लरिकन ढोंढ़ी टोवत बाटे, सुघर खिलौना माँगत बाटे
नाक धुनत बा, रोवत बाटे माँ के मनवा डँहकत होई ?
आज बनाने कइसे होई ?

---

१. नया साल कइसे मनावल जाई ।
२. ईख ।
३. उपहार ।

http://bhojpurisahityangan.com

"शोमेर"[1] के भरमार भइल बा, कामबिना लाचार भइल बा।
चिन्ता में सरकार भइल बा, प्रजा पालन कइसे होई?
भला बनाने कइसे होई?

युवक युवतियाँ नाच रहल बा, निशा-जहर में डूब रहल बा
चाहे देस रसातल जाई ओकर चिन्ता नइखे कोई?
आज बनाने कइसे होई?

मंहगी पग पग पर छइले बा, गला गरीबन के चिपले बा।
सब के मामर हेठ भइल बा आगे दिनवा अब का होई?
भला बनाने कइसे होई?

कदम बढ़ावऽ सोच समझ के, खरिचऽ रुपया सोच समझ के
नातऽ भिखमंगा बनकर के टुकुर टुकुर ताके के होई?
आज बनाने कइसे होई?

सदा सुखार नहीं होवेला, एकदिन बरखा भी बरसेला।
सुख के सूरज निश्चय चमकी दुखके रात सदा ना होई।
तभी बनाने पूरा होई?

आज बनाने, मोरे भैया! भला बनाने कइसे होई?

---

१. बेकार।

●

http://bhojpurisahityangan.com

हिन्दी के झंडिया

[यह गीत हिन्दी प्रचारिणी सभा के समावर्तन समारोह के अवसर पर हिन्दी भवन में 30-12-73 को लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया था]

हिन्दिया के झंडिया ऊड़ल रे गगनवा
कि हिन्दुवन के छतिया भड़ल रे उतनवा
कि हिन्दिया बिदुलिया से दमके गगनवा
कि हिन्दिया के झंडिया ऊड़ल रे गगनवा ।।

चमकेला केकरा के बिजुरी नयनवा ?
सत संगतिया के लिलरा चननवा ?
हिन्दिया के चमकेला बिजुरी नयनवा
कि सत संगतिया के लिलरा चननवा ।।

झमकेला केकरा के घुंघरू चरनवा ?
खनकेला केकरा के कर में कंगनवा
हिन्दिया के झमकेला घुंघरू चरनवा
कि खनखन खनकेला कर में कंगनवा ।।

केकरा अंगनवा में हरषे सुमनवा ?
छुमक छुमक नाचे चांद तरेंगनवा ?
हिन्दिया अंगनवा में हरषे सुमनवा
कि छुमक छुमक नाचे चांद तरेंगनवा ।।

केकरा मरमवा में गंगिया जमुनवा ?
केकरा मरमवा में रमे नव रतनवा ?
हिन्दिया मरम बहे गंगिया जमुनवा
कि सोलहो सिंगार रमे नव रे रतनवा ।।

केकरा लुभावे ललचावे तन मनवा ?
केकरा मिठाइ देवे गिरनी गहनवा ?
हिन्दिया लुभावे ललचावे तन मनवा
कि खाइ के मिठाइ देवे गहे के गहनवा ।।

केकरा के नीक लागे बोलिया बचनवा ?
पनवा, अरून ओंठ मधु मुस्कनवा ?
हिन्दिया के नीक लागे बोलिया बचनवा
पनवा, अरून ओंठ मधु मुस्कनवा ।।

केकरा के मुख बसे वेद भगवनवा ?
राम के चरितवा मनसवा पुरनवा ?
हिन्दिया के मुख बसे वेद भगवनवा
कि राम के चरितवा मनसवा पुरनवा ।।

केकरा के नाम रटे मीरा, रसखनवा ?
तुलसी, कबीर, सूर नियर विदवनवा ?
हिन्दिया के नाम रटे मीरा, रसखनवा
कि तुलसी, कबीर, सूर नियर विदवनवा ।।

केकरा के गुन गावे साँझ रे बिहनवा ?
केकरा के अँचरा "भगत" के परनवा ?
हिन्दिया के गुन गावे साँझ रे बिहनवा
कि हिन्दिया के अँचरा "भगत" के परनवा ।।

कवने ही लोकवा में हिन्दी के चलनवा ?
लरिका जवान झुमें ललिता ललनवा ?
भारत सुदेसवा में हिन्दी के चलनवा
झूमेला सकल लोक "मोरिच" मगनवा ।।

केकरा दुआर जाई केकरा सरनवा ?
केकरा के नाम लेई होइरे तरनवा ?
हिन्दिया दुआर जाई, संत के सरनवा
कि हिन्दिया के नाम लेई होई रे तरनवा ।।

●

http://bhojpurisahityangan.com

चन्दरावती

चन्दरावती के ले गइले चोर करेजा मोर ना माने ला
अब अँखियन से बरसे ला लोर करेजा मोर ना माने ला ॥

ओकर खातिर माँ - बाप छोड़ली
भैया भी छोड़ली बहिनिया भी छोड़ली
अब मनवा में हूक उठेला । चन्दरावती····

चुन-चुन कलिया हम सेजिया डंसवली
आसा के तेलवा में दियरा जरवली
अब दिलवा गोहार करेला । चन्दरावती····

गली-गली ओकर खातिर ओरहन बेसहलीं
खोवसन सहलीं दुनियाँ बिसरलीं
अब घरवा बिरान लागेला । चन्दरावती····

डहकि डहकि देव देविया के पुजलीं
नदि, परवतिया, बिरिछिया से पुछलीं
कहवाँ मोर चान बसेला ?
चन्दरावती के ले गइले चोर करेजा मोर ना मानेला ।
अब अँखियन से ढरकेला लोर करेजा मोर ना मानेला ।

●

http://bhojpurisahityangan.com

तमोलिन गवने चली

घरे रोवे कतरनी पान
तमोलिन गवने चली ।।
गवने चली हो, गवने चली, घरे रोवे..... ।।
अब लागे गलियाँ सुनसान,
तमोलिन गवने चली ।।

कत्था भी रोवे, सुपारी भी रोवे,
रोवे अत्तर, सुगध पानदान,
तमोलिन गवने चली ।।

रोवे लवंगिया, रोवेला चुनवा,
रोवे रसिया के परिकल जुवान,
तमोलिन गवने चली ।।

जरदा तमाकू दुकनिया भी रोवे,
छैलवन के निकल गइले जान,
तमोलिन गवने चली ।।

सारी बजरिया नगरिया भी रोवे,
गावे "मधुकर" विरहवा के गान,
तमोलिन गवने चली ।।

घरे रोवे कतरनी पान
तमोलिन गवने चली ।।

http://bhojpurisahityangan.com

प्रकाशन— अनेक गीत-संग्रह, नाटक तथा रेडियो-रूपक। प्रस्तुत पुस्तक 'मधुकर के चुनल गीत' में विविध विषयों से विभूषित भोजपुरी गीतों का संकलन।

पुरस्कार— श्री रामदयाल जोशी परिषद् 'पटना' द्वारा स्वर्ण पदक तथा पाँच सौ रुपये नकद। समाज तथा हिन्दी सेवा के लिए एम० बी० ई० से मॉरिशस सरकार एवं ब्रिटेन की साम्राज्ञी द्वारा अलंकृत। भारत सरकार के दो बार विशेष अतिथि।

विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर १९७५, तथा अनेक भारतीय परिषदों तथा संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

लेखक की अन्य रचनाएँ

किताब के नाम			
१. मधु पर्क	....	....	कविता संग्रह
२. वीर गाथा	....	....	,, ,,
३. रागिनी	....	....	,, ,,
४. मधुकरी	....	....	,, ,,
५. रण भेरी	....	....	,, ,,
६. घुरहु मौसा के सनेश	....	....	,, ,,
७. एक कहानी कुत्ती की	....	....	,, ,,
८. रसवन्ती	....	....	,, ,,
९. मधुवन	....	....	,, ,,
१०. रसरंग	....	....	,, ,,
११. गुंजन	....	....	,, ,,
१२. अमर सन्देश	....	....	,, ,,
१३. हमारा देश	....	....	,, ,,
१४. गीताञ्जलि	....	....	,, ,,
१५. स्वागत गान	....	....	,, ,,
१६. हिन्दी गौरव गान	....	....	,, ,,
१७. स्वतंत्रता का सुप्रभात	....	....	,, ,,
१८. सर शिवसागर रामगुलाम	....	....	,, ,,
१९. मधुकलश	....	....	,, ,,
२०. मधुचक्र	....	....	,, ,,
२१. मधुरिमा	....	....	,, ,,
२२. मधुमास	....	....	,, ,,
२३. गोस्वामी तुलसीदास	....	....	,, ,,
२४. जय हिन्दी	....	....	,, ,,
२५. मधुदीप	....	....	,, ,,
२६. मधुकर के चुनल भोजपुरी गीत संकलन	....	....	,, ,,
२७. आदर्श बेटी	....	....	एकांकी